

बारडोली सत्याग्रह, जिसे बारडोली अभियान के रूप में भी जाना जाता है, भारत के गुजरात के बारडोली तालुका (प्रशासनिक प्रभाग) में सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में एक अहिंसक प्रतिरोध आंदोलन था। यह 1928 में हुआ था, और यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रतिष्ठित प्रसंगों में से एक है। बारडोली सत्याग्रह की प्रमुख विशेषताएं और परिणाम इस प्रकार हैं:

पृष्ठभूमि:

1. आर्थिक कठिनाइयाँ: बारडोली क्षेत्र, भारत के कई अन्य हिस्सों की तरह, ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा लगाए गए दमनकारी कराधान और भूमि राजस्व नीतियों के बोझ से जूझ रहा था। किसान अपने भूमि कर का भुगतान करने में असमर्थ थे, जो अक्सर बहुत अधिक होता था।
2. साइमन कमीशन: बारडोली सत्याग्रह साइमन कमीशन के खिलाफ व्यापक विरोध प्रदर्शन के संदर्भ में शुरू किया गया था, जिसे 1927 में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित किया गया था। आयोग में कोई भारतीय प्रतिनिधित्व नहीं था, जिसके कारण महत्वपूर्ण सार्वजनिक आक्रोश पैदा हुआ।

प्रमुख विशेषताएँ:

1. सरदार पटेल का नेतृत्व: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक प्रमुख नेता और बाद में "भारत के लौह पुरुष" के रूप में जाने जाने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल ने बारडोली सत्याग्रह के लिए मजबूत नेतृत्व प्रदान किया। अहिंसक प्रतिरोध और किसानों के कल्याण के प्रति उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता ने आंदोलन की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2. अहिंसक विरोध: बारडोली सत्याग्रह एक अहिंसक विरोध था, जो महात्मा गांधी के सत्याग्रह के सिद्धांतों से प्रेरित था। किसानों ने बढ़े हुए भू-राजस्व का भुगतान करने से इनकार कर दिया और प्रतिरोध के अपने तरीके के रूप में असहयोग को चुना।
3. अस्वीकृत राजस्व संग्रहण: बारडोली में किसानों ने सामूहिक रूप से बढ़े हुए भू-राजस्व का भुगतान रोकने का निर्णय लिया। इस असहयोग ने स्थानीय अधिकारियों और ब्रिटिश प्रशासन पर जबरदस्त दबाव डाला।
4. लंबी अवधि: बारडोली सत्याग्रह फरवरी से अगस्त 1928 तक छह महीने तक चला। इस पूरी अवधि के दौरान, किसानों ने अपना अहिंसक प्रतिरोध जारी रखा।

परिणाम और प्रभाव:

1. सफलता: बारडोली सत्याग्रह ने अपना प्राथमिक उद्देश्य प्राप्त कर लिया। छह महीने के असहयोग और बढ़ते जन समर्थन के बाद, ब्रिटिश सरकार बढ़े हुए राजस्व मूल्यांकन को निलंबित करने पर सहमत हुई। किसानों की मांगें पूरी की गईं और उन्हें अतिरिक्त कर का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं थी।
2. सरदार पटेल की प्रतिष्ठा: बारडोली सत्याग्रह ने सरदार वल्लभभाई पटेल को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख नेता के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बारडोली में उनके नेतृत्व और सफलता ने उन्हें "सरदार" (नेता) की उपाधि दी।
3. प्रेरणा: बारडोली सत्याग्रह की सफलता ने भारत के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह के आंदोलनों को प्रेरित किया, जिससे सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में अहिंसक प्रतिरोध की प्रभावशीलता का प्रदर्शन हुआ।
4. परंपरा: बारडोली सत्याग्रह भारत की आज़ादी की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण अध्याय बना हुआ है। इसने अन्यायपूर्ण नीतियों को चुनौती देने में शांतिपूर्ण असहयोग की क्षमता को प्रदर्शित किया।

बारडोली सत्याग्रह को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक घटना के रूप में याद किया जाता है, जिसने सामाजिक-आर्थिक अन्याय और दमनकारी कराधान को संबोधित करने में अहिंसक विरोध की शक्ति का प्रदर्शन किया था। आंदोलन में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका ने उन्हें भारत के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक बनने में योगदान दिया, और बाद में उन्होंने स्वतंत्र भारत में रियासतों के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।